International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

डिजिटल आधुनिकता के युग में बदलती लैंगिक भूमिकाएं: वाराणसी के बजरडीहा क्षेत्र के हथकरघा बुनकर परिवारों की महिलाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रो0 (डा0) रितु घोष[1] अंकिता दीप[2]

[1]विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग श्री जे0एन0पी0जी0 कालेज, चारबाग, लखनऊ
[2]शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सार

भारत में हथकरघा उद्योग अधिकतर महिला केंद्रित है, परंतु वाराणसी का हथकरघा उद्योग पारंपरिक रूप से पुरुष केंद्रित ही रहा है. जिसमें मुख्य रूप से बुनकारी का कार्य पुरुषों द्वारा संपन्न किया जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य के कारण अक्सर लोग सबसे बड़े और अदृश्य सहभागिता को नजर अंदाज कर देते हैं, महिलाओं की सहभागिता जिसे हम लैंगिक परिवर्तन के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे। इसके माध्यम से यह जानेंगे कि कैसे महिलाओं का अवैतनिक और मान्यता प्राप्त कार्य उत्पादन प्रक्रिया में कैसे सहभाग देता है, साथ ही यह जानने का प्रयास करेंगे कि कैसे बदलती सामाजिक आर्थिक परिस्थितियां बुनकर परिवारों में लैंगिक भूमिका को प्रभावित कर रही है।

यह अध्ययन बजरडीहा के बुनकर परिवारों के बीच किए गए साक्षात्कार और प्रायोगिक क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित होगा, इसमें महिलाओं की भूमिका का पता लगाने के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाएगा, जिसमें सूत तैयार करने से लेकर घरेलू प्रबंधन जैसी अन्य गतिविधियां भी शामिल होंगी।

निष्कर्षों से पता चलता है कि महिलाओं को कभी भी प्राथमिक बुनकर के रूप में मान्यता नहीं प्राप्त हो सकती और उनका कार्य सदा ही अवैतनिक, अदृश्य ही रह जाएगा, उन्हें किसी भी प्रकार का निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से भी वंचित रखा जाता है। महिलाओं की शिक्षा और डिजिटल प्रौद्योगिकियों तक सीमित पहुंच भी लैंगिक संबंधों को प्रभावित कर रही है।

इस अध्ययन में यह भी तर्क दिया गया कि लैंगिक परिवर्तन को न केवल लैंगिक भूमिका में बदलाव के रूप में समझा जाए, बल्कि महिलाओं के श्रम की निरंतर अदृश्यता की एक आलोचनात्मक परीक्षा के रूप में भी समझा जाना चाहिए। समावेशी हथकरघा नीतियों को विकसित करने और लैंगिक अवसरों व समानता को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं के योगदान को पहचानना आवश्यक है।

मुख्यशब्द : लैंगिक परिवर्तन, अदृश्य श्रम, हथकरघा उद्योग, लैंगिक भूमिका।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में हथकरघा उद्योग सिर्फ एक आर्थिक गतिविधि का साधन नहीं, बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारंपरिक विरासत के रूप में विद्यमान है। हथकरघा उद्योग की विशिष्ट विशेषता इसकी पारिवारिक कार्य प्रणाली है, जिसमें परिवार के विभिन्न सदस्य अपनी क्षमता और सामाजिक भूमिकाओं के अनुसार योगदान देते हैं। इस व्यवस्था में पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं की भी सहभागिता महत्वपूर्ण रही है, लेकिन महिलाओं के श्रम को प्रायः वह पहचान प्राप्त नहीं होती, जिसकी वह हकदार है। वाराणसी का हथकरघा उद्योग भारतीय वस्त्र परंपरा का एक विशिष्ट उदाहरण है, जिसमें महिलाओं की भूमिकाओं का वर्णन अक्सर उस रूप में नहीं हो पाता, जिसकी उन्हें

अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि उत्पादन प्रक्रिया में उनके श्रम को कई बार स्वतंत्र आर्थिक कार्य के बजाय पारिवारिक सहयोग के रूप में देखा जाता है।

हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की भूमिका को समझने के लिए उनके श्रम की प्रकृति और लैंगिक आधार पर कार्यों के विभाजन का अध्ययन आवश्यक है। महिलाओं द्वारा किए जाने वाले कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन नहीं हो पाता, जिसके कारण उनका श्रम अक्सर अदृश्य बना रहता है। यह स्थिति केवल आर्थिक असमानता को नहीं दर्शाती बल्कि परिवार और समाज में महिलाओं की स्थिति, पहचान तथा निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से श्रम विभाजन लैंगिक संबंधों से भी प्रभावित होता है क्योंकि पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के अनुसार महिलाओं के श्रम को सहयोगात्मक तथा सहायक कार्य के रूप में देखा जाता है।

वर्तमान समय में डिजिटल आधुनिकता ने सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन की नई संभावनाएं उत्पन्न की है। महिलाओं के लिए भी नई तकनीकी आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता और स्वतंत्र सामाजिक पहचान विकसित करने का माध्यम बन सकती हैं। हालांकि डिजिटल आधुनिकता के अवसर को शिक्षा, डिजिटल साक्षरता जैसे कार्य प्रभावित करते हैं जिसके कारण यह सभी सामाजिक समूह को समान रूप से उपलब्ध नहीं है।

इस प्रकार डिजिटल आधुनिकता एक तरफ महिलाओं को सशक्त कर सकती है, तो वहीं दूसरी तरफ मौजूदा लैंगिक असमानताओं को और भी बढ़ा सकती है।

उद्देश्य

- हथकरघा बुनकर परिवार की महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना
- वाराणसी के हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भूमिका और योगदान का अध्ययन करना
- महिलाओं के अवैतनिक और अदृश्य श्रम की प्रकृति को समझना
- डिजिटल आधुनिकता के संदर्भ में महिलाओं द्वारा इन तकनीकों के उपयोग का विश्लेषण करना
- आधुनिकता के दौर में महिलाओं के समक्ष लैंगिक असमानताओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना

मुख्य प्रश्न

- हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक भूमिका क्या है?
- हथकरघा उत्पादन में महिलाओं के अदृश्य श्रम की प्रकृति क्या है?
- परिवार में महिलाओं की पहचान व सामाजिक पहचान में क्या भिन्नता है?
- डिजिटल आधुनिकता महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक भूमिका को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है?
- क्या डिजिटल आधुनिकता पारंपरिक लैंगिक असमानताओं में कोई परिवर्तन ला रहा है?

केंद्रीय तर्क

प्रस्तुत शोध पत्र का केंद्रीय तर्क यह है कि वाराणसी के बजरडीहा क्षेत्र के हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित नहीं है, बल्कि वे उत्पादन प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इसके बावजूद उनका श्रम अक्सर अवैतनिक व अदृश्य रह जाता है। महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को स्वतंत्र आर्थिक गतिविधि के बजाय पारिवारिक सहयोग के रूप में देखा जाता है। जिस कारण उनकी सामाजिक पहचान प्रभावित होती है और लैंगिक असमानताओं को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करती है। इसके माध्यम से यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल आधुनिकता के दौर में महिलाओं को इसका पूरा लाभ मिल पा रहा है या नहीं और डिजिटल आधुनिकता महिलाओं को सशक्त बनाने में किस प्रकार सहयोग प्रदान कर रहा है।

इस प्रकार अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल आधुनिकता के वर्तमान दौर में महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन, पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं की निरंतरता और लैंगिक असमानताओं के बीच किस प्रकार का अंतर संबंध विकसित हो रहा है।

साहित्यिक समीक्षा

प्रस्तुत साहित्य समीक्षा में हथकरघा उद्योग बुनकर समुदाय की सामाजिक आर्थिक स्थिति, महिला श्रमिकों का योगदान, अवैतनिक, पारिवारिक श्रम तथा डिजिटल साक्षरता से संबंधित 11 अध्ययनों का क्रमबद्ध विवेचन किया गया है।

S-M- Ansari and A- Tripathi (2026)– इन्होंने अपने शोध पत्र में वाराणसी के बनारसी साड़ी बुनकर समुदाय की सूचना संबंधी आवश्यकताओं तथा सूचना प्राप्त करने के व्यवहार का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह समझना था कि बुनकर अपने पारिवारिक व्यवसाय, कच्चे माल, नवीन डिजाइन, आदि सूचनाएं किस प्रकार प्राप्त करते हैं। शोधकर्ताओं ने वाराणसी के सात बुनकर केंद्रित क्षेत्र में अद्ध संरक्षित साक्षात्कार के माध्यम से बुनकरों के सूचना संबंधी अनुभवों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि बुनकर समुदाय में आवश्यक एवं प्रासंगिक सूचनाओं की कमी उनके आर्थिक तथा व्यावसायिक विकास को प्रभावित करती है।

Shweta Sonkar(2026)– यह शोध पत्र भारत के ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्र में कार्यरत महिला हथकरघा श्रमिकों की दयनीय स्थिति का एक व्यापक लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन मुख्य रूप से चौथी अखिल भारतीय हथकरघा जनगणना और अन्य सरकारी माध्यमिक आंकड़ों पर आधारित है। इस शोध पत्र का निष्कर्ष है कि यदि भारत के हथकरघा उद्योग को सतत रूप से बचाना है, तो महिला श्रमिकों की आर्थिक असुरक्षा को दूर करना होगा, महिला श्रमिकों को सहायक के बजाय मुख्य बुनकर के रूप में मान्यता दी जाए ताकि वे सरकारी लाभो की हकदार बन सके।

R-K Chaudhary and Dr-S-K Mishra (2026)– इनके द्वारा प्रस्तुत शोध में हस्तशिल्प क्षेत्र के कारीगरों के सशक्तिकरण तथा सतत विकास में डिजिटल साक्षरता की भूमिका का वैचारिक विश्लेषण किया गया है। लेखकों ने डिजिटल साक्षरता को केवल मोबाइल फोन अथवा इंटरनेट के संचालन तक सीमित न मानकर, इसे तकनीकी, सूचनात्मक, संचारात्मक, वित्तीय एवं डिजिटल सुरक्षा संबंधी क्षमताओं के व्यापक रूप में प्रस्तुत किया है। लेखकों ने स्पष्ट किया है कि डिजिटल तकनीक की उपलब्धता मात्र से कारीगरों का सशक्तिकरण सुनिश्चित नहीं होता, बल्कि इसके लिए प्रशिक्षण, आर्थिक संसाधन, तकनीकी आधारभूत संरचना और डिजिटल सुरक्षा संबंधी जानकारी आवश्यक है।

Sucheta Paul, Rupa Biswas and Rahul Bhattacharya (2024)– यह अध्ययन वाराणसी में किया गया है, जो आज के समय के बदलते सामाजिक आर्थिक परिदृश्य में बुनकरों के सामने आने वाली परेशानियों और अवसरों का अध्ययन करता है। इसके साथ ही यह बुनकरो कि सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करता है। इस अध्ययन में यह बात सामने आई है कि हैंडलूम क्षेत्र खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत बड़ी मात्रा में रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है, परंतु उदारवादी अर्थव्यवस्था के कारण इस क्षेत्र द्वारा किए गए उत्पादन में लगातार गिरावट आ रही है। यह उन लोगों के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकती है, जिनका पूरा रोजगार इस पर आश्रित है, यह उन परिवारों के लिए अत्यधिक नुकसानदेह हो सकता है साथ ही हमारी परंपरा को भी नुकसान पहुंचा सकता है। इस अध्ययन का निष्कर्ष इस उद्योग को एक निरर्थक उद्योग मानता है, जिसको विकसित करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

Rithika Dubey (2021)– यह शोध पत्र वाराणसी के प्रसिद्ध बनारसी रेशम और बुनाई उद्योग में महिलाओं की अदृश्य लेकिन बेहद महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताता है। यह शोध पत्र दिखाता है कि कई महिलाएं अब सीधे करके पर बैठकर बुनाई का काम भी कर रही है। महिलाओं को इस क्षेत्र में पहचान का संकट अधिक देखने को मिलता है। शोध पत्र के अनुसार महिला बुनकरों को सरकारी ऋण, मुद्रा योजना आदि का लाभ नहीं मिल पाता है।

शोधकर्ता का निष्कर्ष है कि यदि वाराणसी के बुनाई उद्योग को पुनर्जीवित करना है, तो महिला श्रमिकों को औपचारिक पहचान देना और उन्हें सीधे बाजार से जोड़ना अनिवार्य है, जब तक उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं किया जाएगा और सरकारी नीतियों में उन्हें विशेष स्थान नहीं मिलेगा, तब तक उनका यह महत्वपूर्ण योगदान अदृश्य ही रहेगा।

Pushpendra Singh and Falguni Pattanaik (2020)– यह शोध पत्र भारत में महिलाओं के श्रम बाजार से बाहर रहने और उनके अत्यधिक अवैतनिक घरेलू काम में लगे होने के कारणों का एक बेहद गहरा और वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोधकर्ता मुख्य रूप से तीन स्तरों पर महिलाओं की स्थिति की जांच करते हैं बाधाएं, विकल्प और कैरियर। इस शोध पत्र का निष्कर्ष है कि भारत के आर्थिक विकास के लिए महिलाओं के इस अदृश्य श्रम को पहचानना और उन्हें मुख्य धारा में लाना जरूरी है। सरकार को बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल के लिए सुलभ और किफायती संस्थान बनाने चाहिए ताकि महिलाओं का समय बच सके। महिलाओं को सिर्फ किताबी ज्ञान देने के बजाय रोजगार उन्मुख और तकनीकी शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उनके करियर की बाजार में वैल्यू बढ़ सके।

Sonali Chakraborty (2019)– यह शोध पत्र पश्चिम बंगाल के हथकरघा उद्योग में पारिवारिक श्रम के छिपे हुए लेकिन विशाल योगदान का गहन सांख्यिकी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र यह स्पष्ट करता है कि पश्चिम बंगाल के ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्र में कृषि के बाद सबसे बड़ा रोजगार देने वाला यह हथकरघा क्षेत्र वास्तव में महिलाओं के मुफ्त घरेलू श्रम के दम पर टिका हुआ है, यदि इन महिलाओं को आर्थिक नीतियों में स्वतंत्र श्रमिक के रूप में मान्यता नहीं दी गई तो बुनकर परिवारों की गरीबी को दूर करना असंभव होगा।

Divya Dwivedi, Priyanka kesarvani and Monisha Singh (2019)– इस अध्ययन में वाराणसी जनपद के हथकरघा बुनकरों की प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बुनकरों के समक्ष आने वाली सामाजिक आर्थिक तथा उत्पादन संबंधी चुनौतियों का अध्ययन करना था। शोधकर्ताओं ने उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति के माध्यम से 50 हथकरघा बुनकरों का चयन किया। अध्ययन में प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली एवं प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किए गए तथा उनका विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वाराणसी का हथकरघा उद्योग अवनति की ओर बढ़ रहा है, इसका प्रमुख कारण तकनीकी विकास का अभाव, पारंपरिक कारघो पर निर्भरता तथा उत्पादन प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयां है।

Rebecca Maria Dias (2019)– यह शोध मेघालय की महिला बुनकरों पर आधारित है, इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिकीकरण ने हथकरघा उद्योग और महिलाओं की सांस्कृतिक पहचान को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस अध्ययन में यह बताया गया है कि हथकरघा उद्योग ग्रामीण और अर्ध ग्रामीण लोगों के लिए रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह उनके लिए सिर्फ आजीविका का साधन नहीं बल्कि स्थानीय संस्कृति और परंपरा का भी हिस्सा है। हथकरघा उद्योग में परिवर्तन लाने के लिए सरकार द्वारा नई तकनीक और योजनाओं का इस्तेमाल कर इसका आधुनिकीकरण करने का प्रयास किया गया है।

Tanushree Saw, Arnab Das and Soumi Dey (2016)– यह शोध पत्र वाराणसी के हथकरघा उद्योग से जुड़ी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता और उनके घरेलू व सामाजिक सशक्तिकरण का एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन मुख्य रूप से वाराणसी के बुनकर परिवारों की 500 विवाहित मुस्लिम महिलाओं पर किए गए सर्वे पर आधारित है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह जांचना था कि इतना बड़ा आर्थिक और शारीरिक योगदान देने के बावजूद इन महिलाओं के पास परिवार और समाज में निर्णय लेने की कितनी शक्ति है। इस शोध पत्र का निष्कर्ष है कि केवल आर्थिक गतिविधियों में शारीरिक रूप से शामिल होना ही महिलाओं की सशक्तिकरण की गारंटी नहीं देता है।

Dikccha Tiwari (2015) – यह अध्ययन बुनकरों की रहने की व्यवस्था पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करता है। इस अध्ययन के माध्यम से महिलाओं की खराब स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया गया है, साथ ही आगे

आने वाली पीढ़ी का इस उद्योग में कम सहयोग इस उद्योग की गिरती अर्थव्यवस्था को दिखाता है, जिसका भविष्य खतरे में है। इस अध्ययन में डाटा संकलन के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार, केस अध्ययन विधि और समूह चर्चा का इस्तेमाल किया गया है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि बुनकर जगहो या जिन घरों में रहते हैं, वहां बिजली की सही व्यवस्था नहीं है। इस उद्योग में बुनकरों को किसी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं होता इसीलिए ज्यादातर बुनकर इस क्षेत्र को छोड़कर अन्य की तरफ बढ़ रहे हैं। इस अध्ययन में बुनकरों के जीवन को सुविधापूर्ण बनाने के लिए उनके अनेक सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

समग्र अवलोकन – इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि हथकरघा उद्योग केवल उत्पादन और रोजगार का स्रोत नहीं बल्कि पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान व पारिवारिक श्रम से जुड़ी सामाजिक संस्था भी है। साहित्य में बुनकरों की आर्थिक असुरक्षा, तकनीकी एवं उत्पादन संबंधी चुनौतियां, महिलाओं के अवैतनिक व अदृश्य श्रम, उनकी सीमित भागीदारी जैसे पक्ष सामने लाता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। इसमें हथकरघा उद्योग से जुडी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति तथा उनके पारंपरिक भूमिका में होने वाले परिवर्तनों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में महिलाओं के श्रम, लैंगिक असमानता, डिजिटल सहभागिता और सामाजिक पहचान के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया गया है।

वर्णनात्मक दृष्टिकोण में महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है, वही विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से डिजिटल आधुनिकता के संदर्भ में महिलाओं की बदलती भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन का भौगोलिक संदर्भ वाराणसी का हथकरघा उद्योग एवं उससे जुड़े बुनकर परिवार हैं। अध्ययन में क्षेत्र की महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है जिनकी सामाजिक आर्थिक भूमिका को समझने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है, इसके लिए पूर्व प्रकाशित शोध पत्र, शोध प्रबंधों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में महिला बुनकरों की सामाजिक आर्थिक स्थिति, लैंगिक श्रम विभाजन, अवैतनिक श्रम, तकनीकी सहभागिता से संबंधित उपलब्ध साहित्य को आधार बनाया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित होने के कारण उपलब्ध प्रकाशित साहित्य की सीमा तक ही केंद्रित है। वाराणसी के हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भूमिका से संबंधित सभी पहलुओं पर समान मात्रा में प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध होना आवश्यक नहीं है। अध्ययन में महिलाओं के अनुभव और डिजिटल सहभागिता से संबंधित कुछ ऐसे पक्ष भी हो सकते हैं जिनका उपलब्ध साहित्य में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत निष्कर्ष उपलब्ध दीजिए सामग्री के विश्लेषण पर आधारित है।

सैद्धांतिक ढांचा

प्रस्तुत अध्ययन के सैद्धांतिक ढांचे के अन्तर्गत सिल्विया वाल्बी का नारीवादी सिद्धांत, एंथोनी गिडेंस का आधुनिकता का सिद्धांत, वैन डाइक का डिजिटल असमानता का सिद्धांत व सिल्विया फेडरिकी का अवैतनिक श्रम एंव सामाजिक पुनरूत्पादन के दृष्टिकोण का इस्तेमाल किया गया है, जिसके माध्यम से महिलाओं की स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है।

इस सैद्धांतिक अवधारणाओं के माध्यम से वाराणसी के बजरडीहा क्षेत्र मे हथकरघा बुनकर परिवार में महिलाओं की बदलती लैंगिक भूमिकाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध में सैद्धांतिक ढांचे का उद्देश्य यह समझना है कि हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की पारंपरिक भूमिका किस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तनों से प्रभावित हो रही है।

नारीवादी सिद्धांत महिलाओं और पुरूषों के बीच विद्यमान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानताओं का विश्लेषण करता है। सिल्विया वाल्बी के पितृसत्ता संबंधी विचारों के आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि सामाजिक संस्थाओं और पारिवारिक संरचनाओं में विद्यमान लैंगिक असमानताएं महिलाओं के श्रम अधिकारों एवं निर्णय लेने की क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करती है।

आधुनिकता सिद्धांत के संदर्भ में एंथोनी गिडेंस बताते हैं कि आधुनिकता ने किस प्रकार समाज के विभिन्न आयामों को परिवर्तित किया है। डिजिटल तकनीक ने महिलाओं के लिए भी अनेक अवसर प्रस्तुत किए हैं। इस सिद्धांत के माध्यम से यह जानने व समझने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल आधुनिकता पारंपरिक सामाजिक व्यवस्थाओं को किस प्रकार चुनौती देती है और किन परिस्थितियों में पुरानी लैंगिक भूमिकाएं बनी रहती हैं।

वैन डाइक ने डिजिटल असमानता का सिद्धांत प्रस्तुत किया है, इनका कार्य स्पष्ट करता है कि डिजिटल असमानता केवल इंटरनेट या मोबाइल की उपलब्धता तक सीमित नहीं है। डिजिटल असमानता का सिद्धांत बताता है कि समाज के सभी वर्गों को डिजिटल तकनीक का सामान लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। महिलाओं के संदर्भ में यह असमानता शिक्षा, आय, पारिवारिक नियंत्रण, तकनीकी प्रशिक्षण और सामाजिक मान्यता से प्रभावित हो सकती है। इस सिद्धांत के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि डिजिटल तकनीक की उपलब्धता अपने आप महिलाओं की सशक्तिकरण की गारंटी नहीं देता।

इसके अतिरिक्त सामाजिक पुनरुत्पादन और अवैतनिक श्रम की नारीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से महिलाओं के घरेलू और उत्पादन संबंधी योगदान का विश्लेषण किया गया है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से महिलाओं के अदृश्य श्रम, दोहरी जिम्मेदारियां और आर्थिक पहचान से संबंधित प्रश्नों को समझा जा सकता है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में इन सैद्धांतिक दृष्टिकोण को परस्पर संबंधित मानते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल आधुनिकता, पारंपरिक लैंगिक संरचना और महिलाओं के श्रम के बीच किस प्रकार अंतर संबंध स्थापित करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य डिजिटल आधुनिकता के वर्तमान दौर में वाराणसी के बजरडीहा क्षेत्र के हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की बदलती लैंगिक भूमिकाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के अंतर्गत महिलाओं के श्रम, सामाजिक पहचान से संबंधित विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया है। उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी है। वह उद्योग में सहभाग देने के साथ–साथ घर के काम भी करती हैं।

अध्ययन से संबंधित साहित्य यह संकेत करता है कि हथकरघा उद्योग में महिलाओं का योगदान कई बार औपचारिक आर्थिक पहचान और उचित पारिश्रमिक से वंचित रह जाता है। हथकरघा उद्योग में महिलाओं की अवैतनिक व अदृश्य श्रम को पर्याप्त सामाजिक एवं आर्थिक मान्यता प्राप्त नहीं हो पाती।

डिजिटल आधुनिकता ने पारंपरिक हथकरघा उद्योग के समक्ष नई संभावनाएं प्रस्तुत की है। इन माध्यमों ने महिलाओं को अपना कौशल प्रदर्शन करने, आर्थिक गतिविधियों में अधिक सहभाग करने का मौका प्रदान किया है। हालांकि डिजिटल तकनीक की उपलब्धता मात्र से महिलाओं का सशक्तिकरण सुनिश्चित नहीं होता। इस संदर्भ में डिजिटल असमानता का प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो जाता है। महिलाओं व पुरुषों के बीच डिजिटल तकनीक के इस्तेमाल में असमानता देखी जाती है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की बदलती लैंगिक भूमिकाएं परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर विकसित होने वाली सामाजिक प्रक्रिया का हिस्सा है। अंततः यह अध्ययन बताता है कि हथकरघा उद्योग में महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए उन्हें सिर्फ एक योगदानकर्ता के रूप में न देखकर उन्हें एक सामाजिक पहचान रखने वाले व्यक्ति के रूप में देखना आवश्यक है। डिजिटल आधुनिकता के दौर में

महिलाओं की बदलती भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन इसी व्यापक परिवर्तन को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

इसी संदर्भ में बदलती हुई लैंगिक भूमिकाओं की अवधारणा महत्वपूर्ण हो जाती है। यहां यह देखना महत्वपूर्ण हो जाता है कि आधुनिक तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता वास्तव में महिलाओं की स्वायत्तता और सामाजिक स्थिति में कितना परिवर्तन ला रही है या इससे उनकी सामाजिक पहचान प्रभावित हो रही है या नहीं।

प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी के बजरडिहा क्षेत्र के हथकरघा बुनकर परिवारों में महिलाओं की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास करता है। इसमें महिलाओं के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष श्रम, लैंगिक श्रम विभाजन, आर्थिक सहभागिता, सामाजिक पहचान जैसे पहलुओं को समझने का प्रयास किया जाएगा। अध्ययन का व्यापक उद्देश्य यह जानना है कि डिजिटल आधुनिकता के दौर में बुनकर परिवार की महिलाओं की पारंपरिक भूमिका और सामाजिक पहचान में किस प्रकार के परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। इस प्रकार यह अध्ययन पारंपरिक श्रम व्यवस्था, लैंगिक असमानता और तकनीकी परिवर्तन के अंतर संबंधों को समझने का एक समाजशास्त्रीय प्रयास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ansari, M. S., & Tripathi, A. (2026). Information behaviour of weaver community in
2. Varanasi: An analytical study. Global Knowledge, Memory and Communication. 75(3/4), 1399-1416. https://doi.org/
3. Chakraborty, S. (2019). Contribution of the unpaid family labour in the handloom sector of textile industry in West Bengal. The Indian Journal of Labour Economics 62(4), 693-713. https://doi.org/
4. Chaudhary, R. K., & Mishra, D. 5. K. (2026). Digital literacy among artisans: Its role in empowering artisans and promoting sustainable growth of the handcraft sector. Acta Innovations, 63(25), 175-188, https://doi.org/
5. Dabey, R. (2021). Contribution of women in the weaving industry of Varanasi, India. The Indian Journal of Social Work, 82(4). HSS. edi.
6. Dias, R. M. (2019). Modernization and cultural identity. The case of Ri-Bhoi women handloom weavers [Master's thesis, Colorado State University Mountain Scholar.
7. Dwivedi, D., Kesarwani, B. P., & Singh, M. (2019). Study on problems of handloom weavers of Varanasi district. International Journal of Applied Social Science, 6171. 1798-1802 Scientific Research Journal.
8. Paul, S., Biswas, R., & Bhattacharya, R. (2024). The handloom weavers of Varanasi: A study on their opportunities and challenges. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 12(4), K680-K688
9. Shaw, T., Das, A., & Dey, S. (2016). Role of gender in decision-making: A study of women attached in handloom weaving. International Journal of Gender Studies in Developing Societies, 113), 278-298. https://doi.org/
10. Singh, P., & Pathnaik, F. (2020). Unfolding unpaid domestic work in India: Women's constraints, choices, and career. Palgrave Communications, 6. Article 111 https://doi.org/
11. Sonkar, S. (2026). Working conditions and economic vulnerability of female handloom workers in India: A descriptive-analytical study based on secondary data. International Journal of Innovations in Science, Engineering and Management, 5(3), 611-622. https://doi.org/
12. Tiwari, D. (2017). Living conditions of weavers: A case study of Varanasi, International Research Journal of Engineering and Technology (IRJET), 4(12).